तदेवाह ॥ अशोकइत्यादि ॥ अशोकादयोरामदाध्यर्थं नगरस्यचे वत्त्यर्थसंगताः मंत्रयममंत्रयन् ॥ २४ ॥ तदेवाह ॥ सर्वमेवेति ॥ कर्तुमईथेतिभूत्यान्प्रत्युक्तिः ॥२५ ॥ 👸 यु०कां० मंत्रिणः पुरोहितश्चैवंसंदिश्यनिर्ययुः ॥ २६॥२७ ॥ लक्ष्मणोव्यजनं तालवंतमयं ॥२८ ॥ अपरं श्वेतवालव्यजनं विभीषणोजगहे ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३० ॥ नवनागसह मात्रणः पुराहितश्ववसादस्यानयथुः ॥ २ ६॥२ ४ ॥ २०६७ ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०५५ ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०६० ॥ २०४ ॥ २०४ ॥ २०४ ॥ २०४ ॥ २०४ ॥ २०४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ १४४ ॥ विमेवाभिषेकार्थजयाईस्यमहात्मनः॥
यंयुस्तूणीरामदर्शनबुद्धयः॥ २६॥ हरि
तोरदमीं उज्ज्ञ प्रश्वनाददे॥ उक्ष्मणो
संकारांराक्षसेंद्रोविभीषणः॥ २९॥ ऋ
विं ज्ञंचनामकुं जरंपर्वतोपमम्॥ आरुरो
गहं ख्वासवीभरणभूषिताः॥ ३२॥ शंख
तेसमायांतंराघवंसपुरः सरम्॥विराजमा
मानं श्राहिभः परिवारितं॥ ३५॥ अमात्ये
जिच्छेत्तामहर्षिजनरक्षकः॥ समाप्तदेवताकार्यः सीते
धर्मस्थापनवस्यः॥ गमोहाश्यक्षः श्रीमान्भगवान्भगता अशोकोविजयश्रैवसिद्धार्थश्रसमाहिताः॥ मंत्रयन्नामरुद्धार्थरस्यर्थनगरस्यच ॥ २४॥ सर्वमेवाभिषेकार्थेजयाईस्यमहात्मनः॥ कर्तुमईथरामस्ययद्यमंगलपूर्वकं॥२५॥इतितेमंत्रिणःसर्वेसंदिश्यचपुरोहितः॥नगरान्निर्ययुस्तूर्णरामदर्शनबुद्धयः॥२६॥हरि युक्तंसहस्राक्षीरथिमद्रइवानघः॥ प्रययोखिमास्थायरामोनगरम्तमम्॥२७॥ जग्राहभरतोरदमी छत्र्वप्रश्चेत्रमाद्दे॥ लक्ष्मणो व्यजनंतस्यमूर्भिसंवीजयंस्तदा॥२८॥ श्वेतंचवालव्यजनंजगृहेपरितःस्थितः॥ अपरंचंद्रसंकाशंराक्षसेंद्रोविभीषणः॥२९॥ऋ षिसंघैस्तदाकाशेदेवैश्वसमरुद्गणैः॥सूयमानस्यरामस्यशुश्रुवेमधुरध्वनिः॥३०॥ततःशत्त्रंजयंनामकुंजरंपर्वतोपमम्॥आरुरो हमहातेजाःसुग्रीवः छवगषेभः॥ ३१॥ नवनागसहस्राणिययुरास्थायवानराः॥ मान्षंविग्रहंकत्वासर्वाभरणभूषिताः॥ ३२॥ शंख शब्दप्रणादेश्वदुंदुभीनांचिनस्वनैः॥प्रययोपुरुषव्याघ्रसांपुरींहर्म्यमालिनीम्॥३३॥दृहशुक्तेसमायांतंराघवंसपुरःसरम्॥विराजम्। नंवपुषारयेनातिरथंतदा॥ ३४॥ तेवर्धयित्वाकाकुत्स्थंरामेणप्रतिनंदिताः॥ अनुजग्मुर्महात्मानंभ्रात्वभिःपरिवारितं॥३५॥ अमात्यै ब्राह्मणैश्वेवतथाप्रकृतिभिर्वतः॥श्रियाविरुरुचेरामोनक्षत्रैरिवचंद्रमाः॥३६॥ शोलक्ष्मणानुजः ॥ सत्येकनिरतःशास्तापरदारसहोदरः ॥ सुपीवराज्यदोधन्वीरावणानुजराज्यदः ॥ शरणागतसंत्राताधर्मस्थापनतत्परः ॥ रामोदाशरथिःश्रीमान्भगवान्भरता पजः ॥ शरण्योरामइत्येवंशुश्रुवेकाहरुध्वनिरिति ॥ ३३ ॥ ते नागराः ॥ ३४ ॥ तेनागराः वर्धयित्वा आशीर्भिरितिशेषः ॥ ३५ ॥ ३६॥